सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण अंक - द्वितीय

Vibrant Pushti

जय श्री कृष्ण

"निर्जला" जल के बिना।

जीवन के पंच महाभूत तत्वों का एक उत्तम तत्व। पृथ्वी के मंडल में सर्वाधिक राशि है। जल की उत्तमता ही ऐसी है कि आज जगत के सारे वैज्ञानिक ब्रह्मांड में अनेक ग्रहों उपर ढूँढते है। बिना जल नहीं जीवन।

"निर्जला ऐकादशी" को समझना अति आवश्यक है।

शास्त्रों में जो माहात्म्य दर्शाया है वह स्वर्ग और नर्क की बातें पर सही में ऐसा नहीं लगता कि हमें सत्यता समझनी चाहिए।

आज जल की जो परिस्थिति है उनके सुधार के लिये हम कुछ करे तो अचूक स्वर्ग प्राप्ति होगी नहीं तो नर्क में तो जीते ही है।

यह न कोई मान्यता विरोधी है यह तो जागृतता है, हमारे जीवन की मुख्य जिम्मेदारी है।

जल बचा कर शुद्ध रखें तो हमारा जीवन भी शुद्ध हो।

आज का यह महत्व दिन पर संकल्प करे तबहिं "निर्जला ऐकादशी" हमने अपनायी।

"Vibrant Pushti"

कान्हा! कौन हो तुम?

जो पलकों से भी नींद चुराये

जो होटों से भी पुकार चुराये

जो नयनों से भी तस्वीर चुराये

जो कर्णो से भी स्वर चुराये

जो सांसों से भी महक चुराये

जो तन से भी स्पर्श चुराये

जो मन से भी याद चुराये

जो आत्म से प्रीत चुराये

जो बंसी की तान से सुधबुध चुराये

जो तिरछे नयनों से दिल चुराये

तो भी तुं हमारे पीछे पडा है।

तुहीं बता अब ऐसा क्या है हममें जो पल पल हमें छेडता है।

"Vibrant Pushti"

कैसा है यह विरह

क्या इसको कोई नहीं समझते?

यह जलता हुआ सूरज भी नहीं?

यह उंचाई भरे पर्वत भी नहीं,

यह ब्रह्मांड में छाया हुआ आसमान भी नहीं?

यह गहराई भरा सागर भी नहीं?

यह रज रज से भरी धरती भी नहीं?

तुम ही कहो क्या करे?

"Vibrant Pushti"
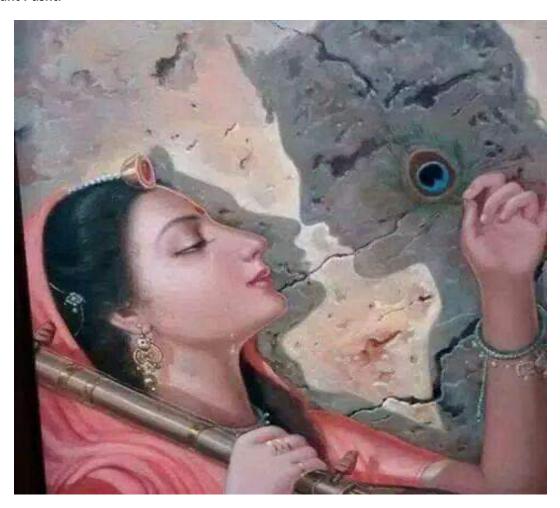
कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम मयूर पंख है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम तिलक है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम काजल है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम नथनी है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम लाली है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम कुंडल है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम वनमाला है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम चिबुक है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये तुलसी माला है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम पीतांबर है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम पायल है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम क्या है?

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

कृष्ण के लिये हम पदपंकज है

कृष्ण कृष्ण कृष्ण

"Vibrant Pushti"

राधे तेरा दास हे मेरी परम प्रिय

निश दिन तेरी सेवा में करु न्योछावर प्रीत

सत्य सत्य सत्य क्या है?

हर कर्म में सत्य

हर भूतकाळ में सत्य

हर वर्तमान में सत्य

हर भविष्य में सत्य

हर संस्कार में सत्य

हर शिक्षा में सत्य

हर अक्षर में सत्य

हर आत्म में सत्य

हर ज्ञान में सत्य

हर भक्ति में सत्य

हर जीवन में सत्य

हर यज्ञ में सत्य

हर संत में सत्य

हर विश्वास में सत्य

हर चारित्र्य में सत्य

हर प्रीत में सत्य

हर विरह में सत्य।

यह सत्य है क्या? क्यूँ हमें हर पल जगाता है?

यह सत्य अखंड ज्योति है जो सदा प्रज्वलित रहती है। जो सदा अंधकार को नष्ट करती है।

"Vibrant Pushti"

इतना तु करना वल्लभ

जब हम तुम्हें पुकारे

वल्लभ नाम तेरो हर पल पल ही निकले

श्रीयमुनाजी पान करत हो

श्रीगिरिवर्य साथ खडे हो

श्री वल्लभ ब्रह्मसंबंध हो

जब हम पुष्टिपथ पर हो

श्रीश्रीनाथजी दर्शन हो

श्रीअष्टसखा कीर्तन हो

श्री विठ्ठल आरति हो

जब हम दंडवत करत हो

एक दास की अर्जी

पुष्टिप्रीत से है गर्जी

पुष्टि नहीं तो सृष्टि

जब हम प्राण पाये

कभी देर मत करना

कभी पुष्टिप्रीत भूलना

आत्म विरह पुकारे

तुम हमारे निकट ही रहना

"Vibrant Pushti"

है कान्हा!

मेरे नयनों से निहाले तो तु अपनी तिरछी नजर से निहाले

मेरे होठों से पुकारे तो तु अपनी बंसी से पुकारे

मेरे चेहरे के हर भाव से न्योछावर करु तो तेरे मुखडे की मुस्कान से छेडे

न कोई अब कछु रीति पास मेरे जो तुज से प्रीत की रीत निभाएं,

अब तो तुहीं जता कोई रीत ऐसी जो केवल तुममें मैं समाऊ।

"Vibrant Pushti"

कल्लोल करत है पपीहा

कुहू कुहू करे कोयल

गुंजन करे हर पंखी

नदी के तरंगें कल कल नाचत

सूरज की किरणें कछु गावत

मोर पायल की झंकार सुनावत

खिलगत है कमल की पंखुडियों

आवत है आज आंगन मेरे

अधर बंसीधर धून सुनावत

नाचत नटखट हमें चुरावत

खेले खेल रास रचावत

यही रहुं मैं नित निराले

सदा मगन रहे एक दूजे में

कान्हा! यही हमारी प्रीत

"Vibrant Pushti"

वल्लभ कुल बालक को "जय श्री कृष्ण" नहीं कहते। पता नहीं क्यूँ यह समाज ने कैसी कैसी अंधश्रद्धा फैलायी है की बिना समझ सबकूछ चलत आवत है।

हम सब विदित है कि "जय श्री कृष्ण" मंत्र की रचना श्री वल्लभाचार्यजी ने रची है।

कैसे रची क्यूँ रची कहां रची जानते है?

हम विनंती करते है सब पुछो, पता करलो - सत्य प्रकट होगा।

"Vibrant Pushti"
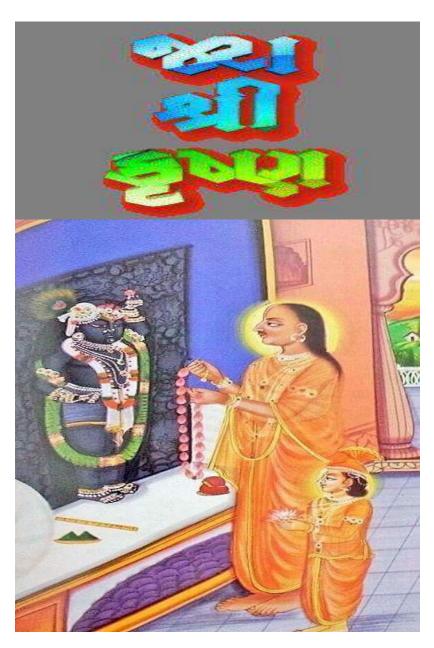
जीवन और आत्म का भेद जो खोले वहीं धर्म कहवाय।

वहीं गुरु है जो आत्म को रोशन करे और जीवन को धन्य।

जब मीले आत्म से परम आत्म वहीं जन्म सफल होय।

जो आत्म फैलाये आत्म ज्ञान भाव वहीं सच्चा मनुष्य जिससे पल पल सूरज उगाय।

"Vibrant Pushti"

"गोवर्धन" पुष्टिमार्ग के हर धडकन में यह बसे है।

क्यों?

उनकी हर गहराई केवल श्री कृष्ण के शरणागत है।

क्यों?

"व्रज" के शिरोमणि है।

क्यों?

"पुष्टिमार्ग के पथ दर्शक है।

क्यों?

"Vibrant Pushti"

राधाजी के दर्शन पाऊं

राधाजी का स्मरण करुं

राधाजी का सत्संग सुनुं

राधाजी की धून लिखुं

रोम रोम राधा हो जाये

नयनों से पाऊं राधा

होठों से पुकारु राधा

कानों से सुनुं राधा

हाथों से लिखुं राधा

"Vibrant Pushti"

"गोवर्धन" यह नाम है इतना अर्थवाचक कि हमें बहुत कुछ संकेत कर जाता है।

"गोवर्धन" गो या ने गैयो का वर्धन करने वाले।

"वर्धन" या ने पालन पोषण और संरक्षण करने वाले जो है वह है "गोवर्धन"।

जो गैयो का पालन पोषण और संरक्षण करता है वह कैसा होगा? वह क्या क्या संकेत, सिंचन और सिद्धि प्रदान कर सकता है?

जिसका चरित्र, कर्म से खुद श्रीप्रभु उनके सानिध्य में प्रकट हुए।

ओहहह! अलौकिक।
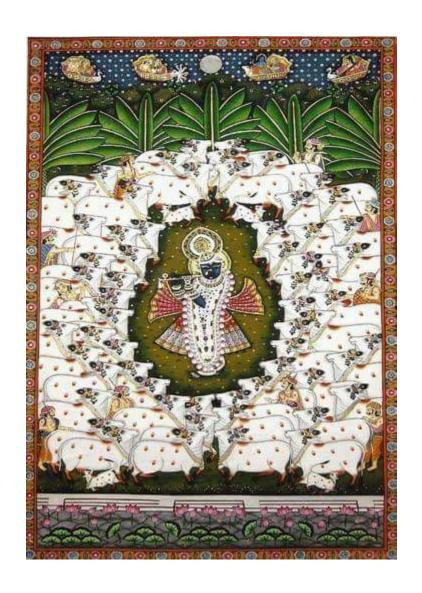
"Vibrant Pushti"

जगत में हम क्या क्या पहचानते है?

जगत में हम क्या क्या ढुंढते है?

जगत में हम क्या क्या पाते है?

जगत में हम क्या क्या खोते है?

उसकी सूची करके जो आये उनहें अपनी अंदर से तराश लो - वह हम है।

"Vibrant Pushti"
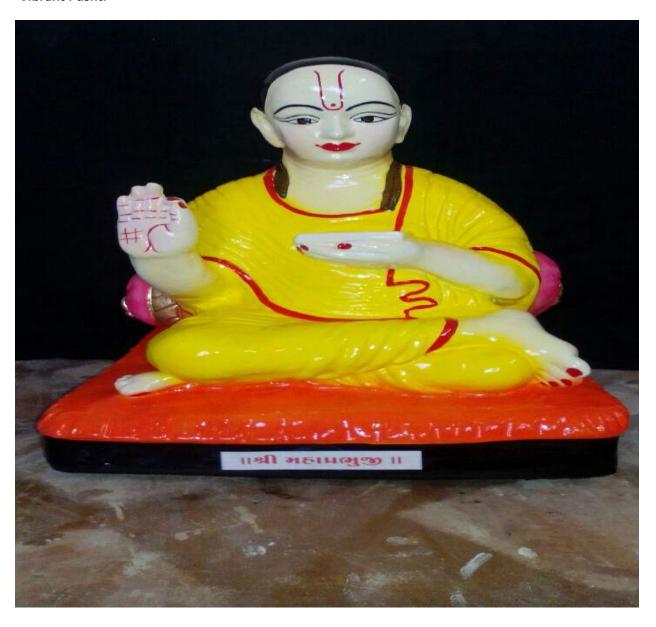
नयनों मे बसी है इंतजार की पुकार

कानों में बसी है बंसी की पुकार

पैरो में बसी है मिलने की पुकार

धडकन में बसी है विरह की पुकार

कब मीले साँवरे कहा मीले साँवरे

युही भटकती फिरु वन वन बांवरे।

"Vibrant Pushti"

हे मयूर पंख! मैं तेरी विरहसखी तु मेरा विरहहर्ता

निकट निकट तु हो सदा प्रीत मेरी सोहाय

तेरी हर तस्वीर से दिल धडकता है मेरा

तेरी हर अदा से मन मचलता है मेरा

क्या तुम सदा यह तस्वीरों में बसोगी

क्या तुम्हें हमारा ख्याल नहीं है?

मेरी सच्ची प्रीत में

राधे!

हर तस्वीर से तुम्हें जींदा करके मेरे रोम रोम में बसा देंगे।

"Vibrant Pushti"

संसार हर क्षण मायाजाल रचता है। यह मायाजाल से वहीं संभल सकता है जो सदा शुद्ध सेवा और योग्य सिद्धांतो से जीते है।

जो सेवा में निस्वार्थ है और जो सिद्धांतो में अडगता है, धर्म संस्थापना है, चारित्र्य है उन्हें यहीं मायाजाल छू नहीं सकती और अपना जीवन जीते जीते मधुर करता रहता है।

"Vibrant Pushti"

हे कान्हा ! तु ही मेरा सहारा

पलछिन पलछिन हर जन्म तुज सदा धयाऊ

पल पल इंतजार में रहे

रज रज ढूँढते रहे

बिंदु बिंदु बरसते रहे

किरण किरण दरशते रहे

अक्षर अक्षर तरासते रहे

स्वर स्वर पूछते रहे

धडकन धडकन गूंजते रहे

डगर डगर चलते रहे

लहर लहर से कहते रहे

पते पत्ते को देखते रहे

महक महक को खिलाते रहे

याद याद से तरसते रहे

तस्वीर तस्वीर से टटोलते रहे

हे प्रिये! साँवरा! कहाँ है?

कहीं का तो इसारा कर,

कहीं का तो संदेशा कर,

कहीं का तो संकेत कर,

यूँही भटकते रहे
या
यूँहीं तडपते रहे
या
यूँही हमसे ...... नहीं नहीं,
नहीं तो.......
"Vibrant Pushti"

" गोविंद "

यह काले घने बादल कया है?

कोई संकेत करते है

या

किसीका इंतजार को तृप्त करने है?

प्रकृति की ऐसी रचना हमारे बैचेन जीवन को क्या सिंचन करती है?

यह क्यूँ श्याम है?

क्या हम पल पल श्याम के लिये जीते है?

यही पराकाष्ठा है मेरे जीवन की?

"Vibrant Pushti"

घनश्याम के साथ घने बादल

घन घन चारों ओर घूम घूम छाये

खेले आंख मिचौली न पकडा जाये

ऐसी भोर में चकोर दौडे

मोर पपीहा शुक गाये

गुंजन माल की यही मिचौली में

घन श्याम मुख दर्शाये

नाच उठा तन झुम उठा मन मोरा

घन घोर से विरह बुंद बरसाये

एक एक घन एक एक श्याम

श्याम मंडली सो भयी

निरखत नैन श्याम सुंदर

बावरी प्रीत में हो गयी।

बंसी की धून राधा ने सुनी

ढुंढने की तान मीरा ने सुनायी

पायल की झंकार राधा ने बजायी

पाने की रीत मीरा ने जतायी

प्रीत राधा प्यारी की

राह मीरा दासी की

"Vibrant Pushti"
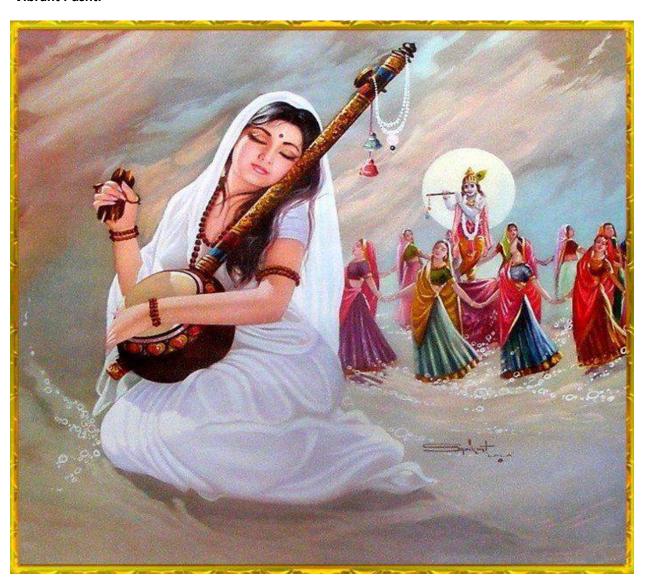
हर पल की हर कहानी है

पर मेरी तो हर पल जिंदगानी है

मन से सुहानी, तन से तरानी

मेरी निशानी है।

कभी झुमुं कभी नाचुं

मुस्कुराना मेरी यारानी है।

सृष्टि सजावुं प्रकृति रचावुं

कर्म की विराहग्नि है।

"Vibrant Pushti"

"कान्हा" सुंदर है नहीं नहीं वह तो सौन्दर्य का अखंड सूर्य है।

"कान्हा" अलौकिक है नहीं नहीं वह तो अलौकिकता का विशाल आकाश है।

"कान्हा" संपूर्ण है नहीं नहीं वह तो संपूर्णता का पूर्ण रूप है।

"कान्हा" हमारी प्रीत है नहीं नहीं वह तो प्रीत का अगाध सागर है।

"कान्हा" कण कण में है नहीं नहीं वह तो कण कण की हर परिवर्तनता में है।

"Vibrant Pushti"
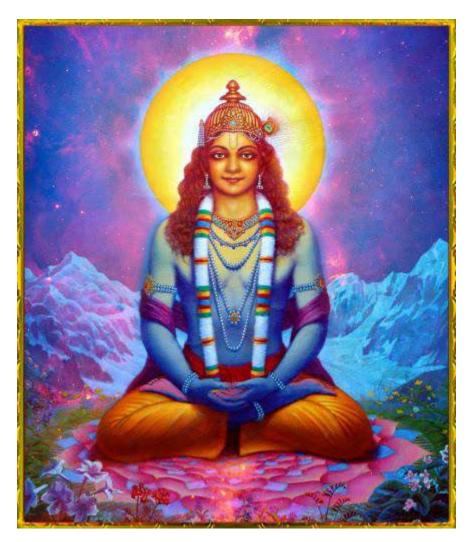
हे माधव !

"जन्म दिन" कभी सोचा है यह क्या दिन है?

यह दिन की महत्वता, यह दिन की गुणवत्ता, यह दिन की उच्चता, यह दिन की उत्तमता अवर्णनीय है।

क्यूँ की यह दिन से हमें हमारी पहचान समझने और परमात्मा को पाने का अमूल्य जीवन दिन है। हमारी सार्थकता से, सामर्थ्यता से, साक्षरता से, शिष्टता से, तपश्चर्या से पुरुषार्थ करने का सीमाचिह्न दिन है। यही दिन से शक्ति पाना है सिद्धि जताने हमारा परम प्रिय दिन है।
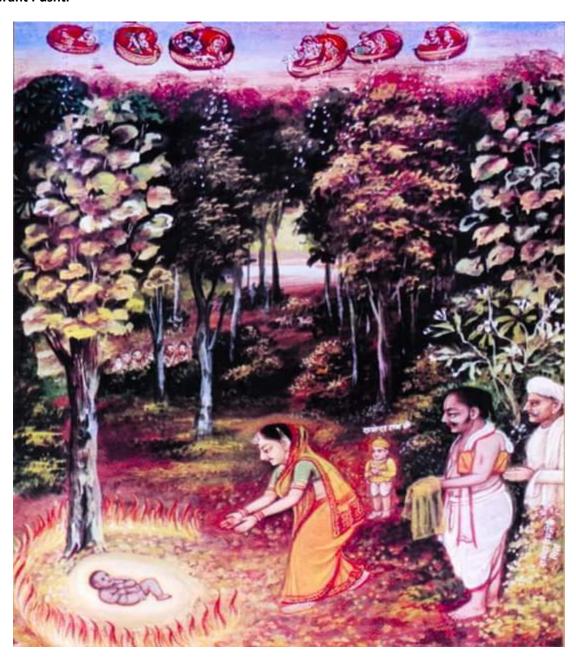
"Vibrant Pushti

ओह! साँवरे, ओ साँवरे घनश्याम।

तिरछी नजर से क्या खडे हो

यूँही मुस्कुराते हुये?

सीधी नजरिया यूँही तकती

रहे छम छम नीर बहाये

अधर धरन बंसी यूँही धरे हो

यूँही हमें पुकारते हुये?

फड फड फडके होठं विरही

रहे तडप तडप सुक जाये

कैसी है यह रीत प्रीत की

जो हर पल नया कर जाये।

"Vibrant Pushti"
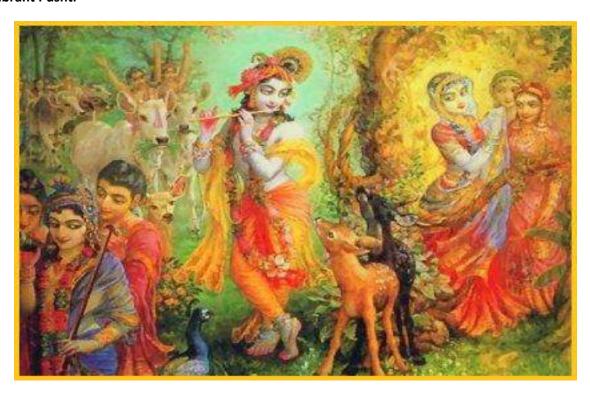
ओहहह! कितने दिन की तडपन

घन घोर घटा आज घनश्याम ने

घुमड घुमड कर बरसायी।

मोर नाचे पपीहा नाचे नाचे मन धराई,

आया श्याम घन घन भर कर

विरह की आग ठहराने

है नटखट! कैसी रीत है तेरी कैसे कैसे निभाई।

"Vibrant Pushti"

राधे

जीवन की रीत में जब हम अपनी एक ऐसी कक्षा पर आ जाते है, जो कक्षा में हम खुद अपने आप को सही तरह समझ सकते है, तब कहीं भी कैसा भी अन्याय या अस्थिरता उत्पन्न हो और हम योग्य न्याय न कर पाए तो हम अयोग्य है और हमारा जीवन भी अयोग्य है। यहीं से ही हम हमारा कुटुंब और समाज का पतन होता है।

"Vibrant Pushti"
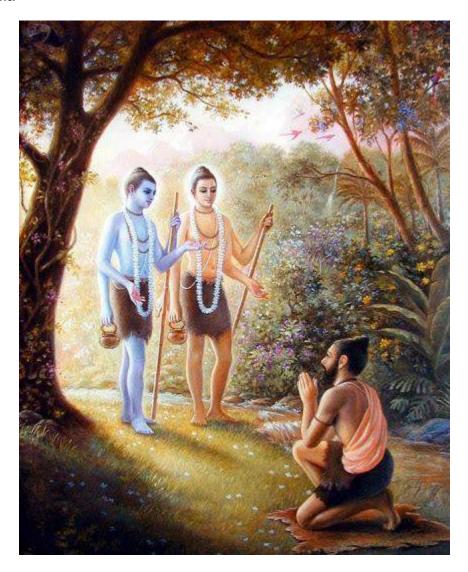
हे ईश्वर सदा मेरी रक्षा करना

में सदा तेरे आश्रय में हूँ

आया हूँ यह जगत में तुझे ढूंढने की तु व्रज में हर पल अपने भक्तों से लीला करता रहता है।

पर यहाँ तो पूरा व्रज छान लिया पर तु कहीं नजर न आया।

क्या तु हर बार हमसे आंख मिचौली खेलता रहता है?

या बार बार कोई खता होती है तो तु हमसे दूर चला जाता है?

अगर एक बार तो कुछ कह दे तो हम भी हममें कोई परिवर्तन करे।

क्या इतना बताने का हक्क भी नहीं है?
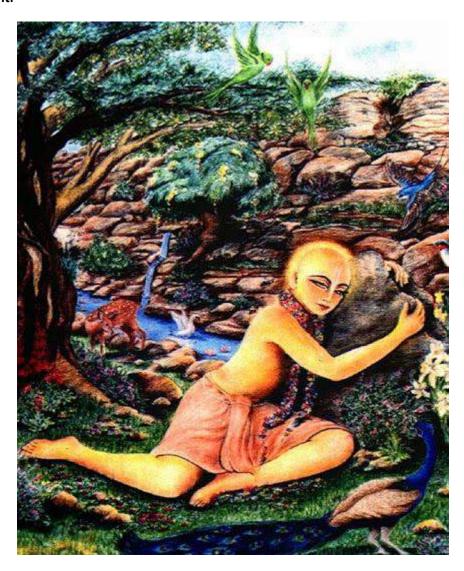
"Vibrant Pushti"

"मंदिर"

"मन" - जिसकी हर नीव शुद्ध मन से

"दर" हर दर पवित्र संस्कार से

"दिर" अतूट धैर्य से।

तो न डगे, न तुटे और न छूटे।

"Vibrant Pushti"
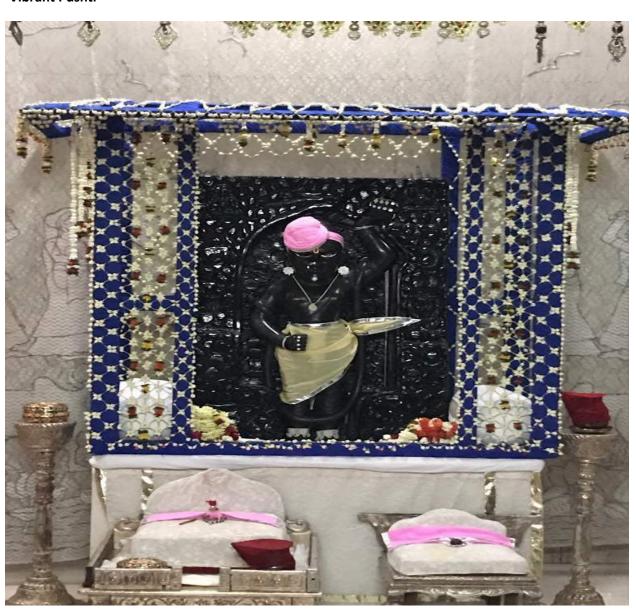
कौनसी ऐसी नजर है कान्हा की

कौनसी ऐसी घडी है कान्हा से मुलाकात की

कौनसी ऐसी याद है कान्हा की

कौनसी ऐसी बात है कान्हा की

जो हर पल मुझे सताये

जो हर पल मुझे पुकारे

जो हर पल थरराये

जो हर पल तडपाये

"Vibrant Pushti"
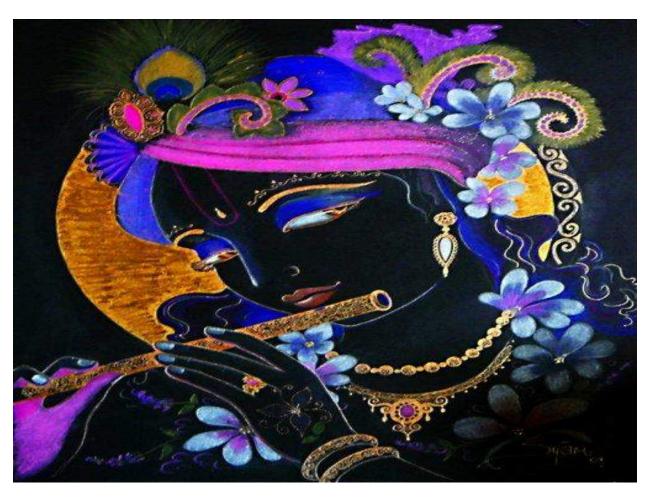
"पुष्टि" या ने पुष्ट करना।

किसे पुष्ट करना - खुद को खुद से पुष्ट करना। "श्री वल्लभ" ने पहले खुद को पुष्ट किया बाद में खुद की पुष्टि की।

"पुष्टि" या ने प्रमाणित।

क्या हमने कभी खुद को प्रमाणित किया है?

प्रमाणित कहा करना है?

किसको करना है?

प्रमाणित वहीं करना है जहां परम मूल तत्व है।

यह सर्वे "श्री वल्लभ" चरित्र में है।

श्रीप्रभु की कृपा या अनुग्रह ऐसे नहीं पा सकते है की श्रीप्रभु स्मरण किया और हमने पा लिया।

अपने आप को श्रीप्रभु के सिद्धांत से प्रमाणित किया तो हम पुष्ट हो सकते है।

यह पुष्टि योग्य विचार और क्रिया द्वारा होती है। जो विचार और क्रिया में विश्वास हो, द्रढता हो, दीनता हो, निस्वार्थ हो, निष्कपट हो और समांतर हो तब ही हम पुष्ट होते है।

"Vibrant Pushti"

किसी भी सूरत पर हम यूँ ही मीट जाते है

किसी भी धून पर हम यूँ ही नाच लेते है

किसी भी गीत पर हम यूँ ही झुम लेते है

किसी भी खुशी पर हम यूँ ही खुश हो जाते है

पर कभी कान्हा की सूरत पर मीट के दिखावो?

पर कभी बंसी की धून पर नाच के दिखावो?

पर कभी कीर्तन या भजन पर झुम के दिखावो?

पर कभी दूसरों की खुशी पर खुश हो के दिखावो?

अरे! ये तो हम हर रोज करते है।

अच्छा! तो शायद मुझमें ही कमी है।

सोच लो!
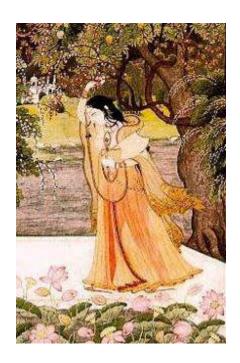
"Vibrant Pushti"

शरीर एक साधन है।

जैसे मन, इन्द्रियों यह सब को हम योग्यता से संस्कृत करेंगे तो यही हमारे साधन सदुपयोग से वर्तन करेंगे।

यही हमारा जन्म सिद्‌ध अधिकार है।
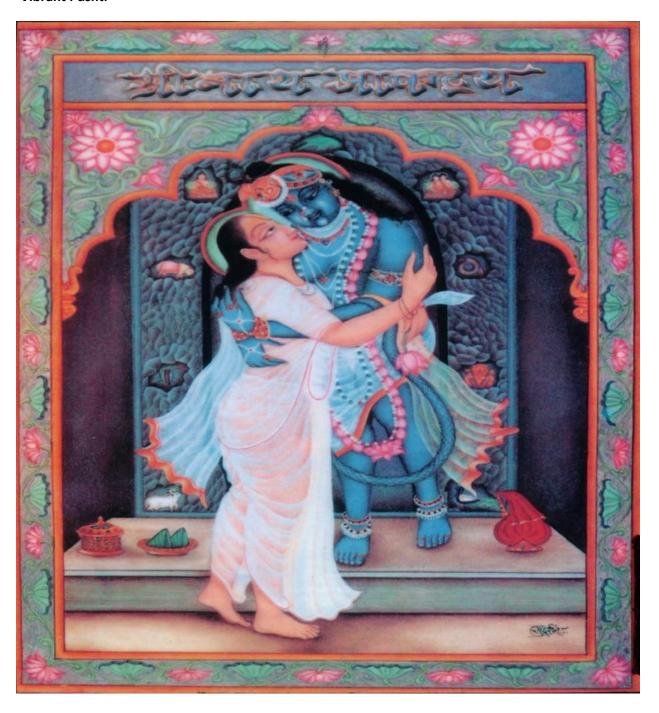
"Vibrant Pushti"

आप सर्वे से विनंती है कि जो जिज्ञासा हममें जागृत होती है,

उसको समझने के लिये ही हम प्रश्न करते है। इसलिये कोई नकारात्मकता नहीं सोचना।

"दैवी जीव" किसे कहते है?

"Vibrant Pushti"
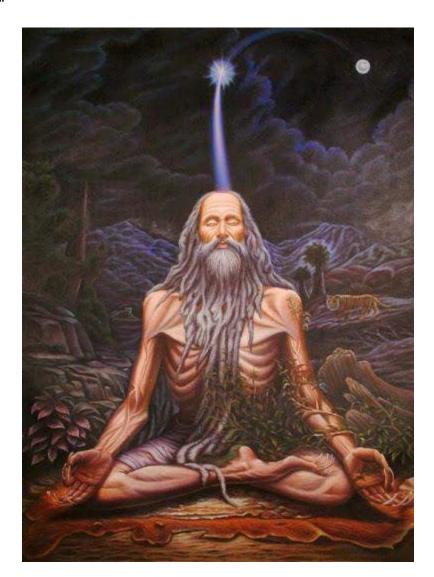
भक्ति तपश्चर्या

कान्हा की मधुरता

कान्हा की मुस्कान

कान्हा की तिरछी नजर

कान्हा की महक

कान्हा की अदा

कान्हा की चाल

कान्हा की प्रीत

हमें क्यूँ छुती है पल पल

क्यूँकी

हम याद करते है पल पल

हम पुकारते है पल पल

हम विरह में है पल पल

"Vibrant Pushti"

याद करते है उन प्रेमी को जो प्रेमी राधा के है।

कब पा ले रज प्रियतम की जो हम खुद व्रज रज हो जाये।

"Vibrant Pushti"
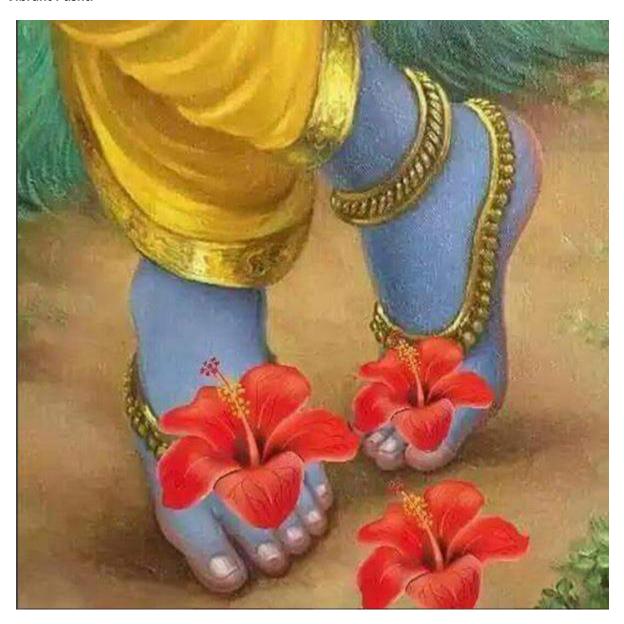
तेरे चरणों में मेरा मैं

स्वीकार करो हे मेरे प्रियतम

अनगिनत सांसो से चलती हुई जिंदगी में कहीं ऐसे तत्वों आये और गये

जिससे हमने हमारी जीवन रीत संवारा।

पर जब श्रीकृष्ण चरित्र का मूळ तत्व ने हमें छुआ तो हममें बिजली सी कौंध गई और हम उनके हो गये और वह मेरा हो गया।

यही मेरा तेरा में वह सबका हो गया और हम अकेले रह गये। कैसे कहें और क्या करे?

बस तब से हम उन्हें ढूंढते है।

"Vibrant Pushti"
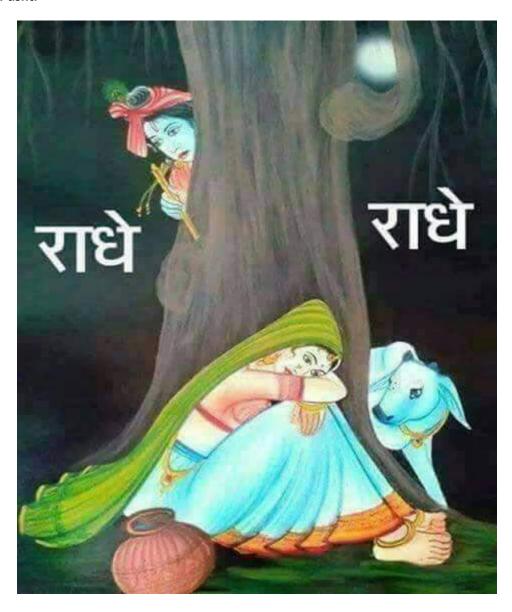
तेरे चेहरे पर दो दो सूरते क्यूँ?

क्या एक सूरत पर तु जीता है वह है और दूसरी सूरत पर तु मरता है वह है।

या

एक सूरत पर तु जीता है तो दूसरी पर हम मरते है।

या

एक सूरत पर तु मरता है तो दूसरी को तडपाने रखा है?

कान्हा समझ लें यही अदा कभी तुम्हें भी तडपायेगी।

"Vibrant Pushti"

तुने कहाँ लगाई इतनी देर अरे ओ साँवरिया

तेरी पलकें न बुंदे

तेरे कर्ण न सुने

तेरा मुखडा न मलके

तेरे होठ न फडफडे

ऐसी कोई रीत नहीं है।

यह तो हम तुम्हारे लिये

बार बार नयन बरसाते है

गीत गुन गुनाते है

मुखडा मुस्कुराते है

होठ से पुकारते है।

कान्हा! क्या हम ऐसे ही करते है?

नहीं नहीं यह तो तुमसे ही शिखा है, इसलिए तो तेरे पास दौड के आते है।

क्यूँकि जब भी पलकें झूकाते है तब तुम दौडते नजर आते हो।

"Vibrant Pushti"

कौन कौन से रुप में पधारते है "श्रीप्रभु"!

आज से "पुरुषोत्तम मास" के रुप में। वाह!

"पुरुषोत्तम" या ने पुरुष + उत्तम।

"श्रीप्रभु" हमें जताने पधारे के मैं तुम्हारा हूँ।

"श्रीप्रभु" हमें मार्गदर्शन के लिये पधारे।

"श्रीप्रभु" हमें आनंद कराने पधारे।

"श्रीप्रभु" हमें हमारा ख्याल कराने पधारे।

"श्रीप्रभु" हमारी साथ हमारा बनने पधारे।

"श्रीप्रभु" हमें उत्तम करने पधारे।

"श्रीप्रभु" ऐसी रीत दर्शाने पधारे कि "कैसे उत्तम पुरुष होना है?

प्रकृति के हर नियम निभाते निभाते आनंद प्रकट कैसे करना वह जागृतता शिखाते है।

केवल विश्वास और निष्ठा से रहे तो हम भी उत्तमता केलव सकते है।

सर्वे जीव तत्व को प्रणाम!
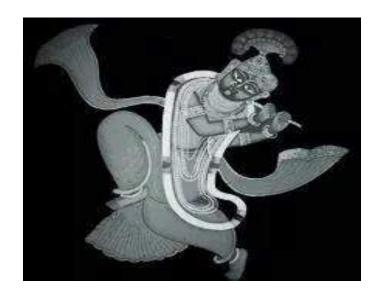
"Vibrant Pushti"

"श्री विष्णु सहस्र नाम"

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबंन्धनात् ।

विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

जिसके स्मरण मात्र से जीव तत्व सांसारिक बंधन से मुक्त हो जाता है।

न उन्हें कोई भी प्रकार का कलेश, चिंता, भय, विपत्ति और दुख का स्पर्श होता है।

सदैव शुद्ध और सात्विक विचार उत्कृष्ट होते है और सत्य की पहचान करता है।

"Vibrant Pushti"
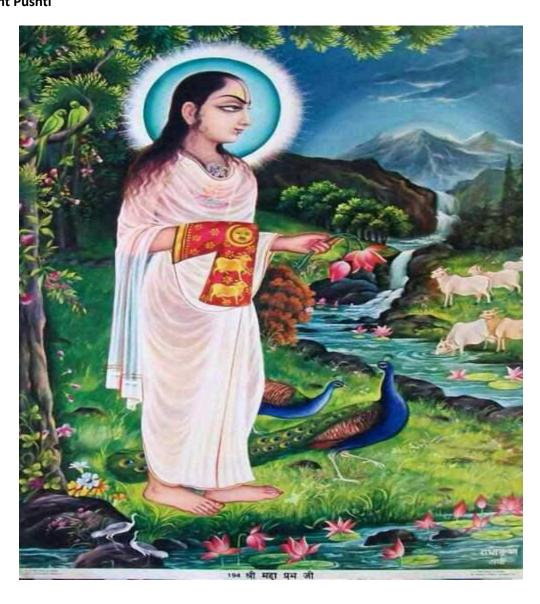
राधाजी कहीं बार बांवरी भयी पर श्याम कभी बांवरे भये!

ऐक बार श्याम अपनी गैया चराते चराते कहीं दूर निकल गया और देखा तो चारो तरफ हरियाली ही हरियाली।

गौवा भी झुमने लगी और श्याम भी।

थोडी देर हुई.... गौवा अपनी धून में और श्याम अकेले रह गये।

अकेले का एहसास जैसे जागा श्याम को राधाजी याद आये,

और वह इजराने लगे।

राधाजी की हर बात, हर अंदाज याद आने लगा।

तन मन से थरथराने लगे, चारों ओर सन्नाटा, और श्याम गंभीर।

उन्हें कुछ सुझाइ न रहा था, कहां बासुरी थी और कहां लकुटीया।

न चहरे पर मुस्कान और न तरवराट।

क्या करे क्या करे में राधाजी की याद आई।

क्या करती होग?

कैसी होगी?

सोचते सोचते वह.... गहराई में खो गये।

वह सोचने लगे .....

महल में खेलती होगी,

नाचती होगी, गाती होगी,

आनंद से सबके साथ झूमती होगी।

और यहां हम तडपते है,

कैसी प्रीत है ये?

इतने में कोई सुरीली आवाज आई..... और श्याम वह तरफ घूमें, तो कोई न था।

थोडी देर में वोही आवाज फिर से सुनाई दिया।

श्याम खडे हो कर वह आवाज की तरफ दौडे, पर कुछ न पाया। वह फिर सन्नाटा में।

वहां फिर वोही आवाज!

श्याम चौक्कने हो गये, और धीरे धीरे वह आवाज की तरफ पहुंचे, तो देखा एक पैड के पीछे किसीका पैर दिखता है।

वह लपक गये।

धीरे धीरे वह पैड के नजदीक पहुंचे तो देखा राधाजी खडे थे।

ओहहह!

आश्चर्य चकित से श्याम खुद को भूल गये और दौडे राधाजी की ओर।

राधाजी शांत और वेदना भरी स्थिति में थे।

पर श्याम उछल पडे - आनंद की लहरों में कुद पडे राधाजी के पास।

राधाजी का गंभीर मुखडा श्याम को चुभने लगा।

और पुछ बैठे.....

राधा! ये क्या? देखो हम आ गये!

राधाजी के नयनों से अश्रु बहने लगे।

श्याम आश्चर्य और अनुकंपा से उदास हो गये, और पूछा....

राधा! यह क्या?

तो राधाजी ने कहा....

क्यूँ! आप उदास नहीं हो?

श्याम ने कहा नहीं तो....

जो तुम्हें देख लिया तो हम क्यूँ उदास?

राधाजी ने कहा - तुम उदास थे इसलिए तो....

क्यूँ हमें पुकारा?

श्याम ने कहा -

हमने कब तुम्हें पुकारा?

अरे! अभी अभी तो झझराते थे और सोचते थे, राधाजी ने रोते रोते कहा।

श्याम! कैसे हो तुम?

श्याम - ओहहह! इतनी याद में राधा आ पहुँची।

ओहहह! कैसी है उनकी प्रीत!

सहज याद में वह मेरे साथ!

और मैं!

ओहहह!

और श्याम.....

"Vibrant Pushti"

"श्री गोवर्धन नाथ पाद युगलं हैयम गवीन प्रियम् ।

नित्यं श्री मथुराधिपं सुखकरं श्री विठ्ठलेशं मुदा ।।"

पुष्टिमार्ग के परम मूळ गौत्र गोवर्धन से प्रकट हुए "श्री गोवर्धन नाथ" के युगल चरण कमल जिन्हें सदा ब्रह्मांड का केवल परप प्रिय नवनीत प्रिय है जो सदैव हमारी आत्मीयता से उत्कर्ष होता है उन्हें हम दंडवत प्रणाम करते है।

जो सदा श्री विठ्ठलेश की सेवा प्रीती से अति सुख पाते है वह नित्य श्री मथुराधिपं या ने मेरे सर्वस्व के पति को वारंवार नमन करते है।

"Vibrant Pushti"
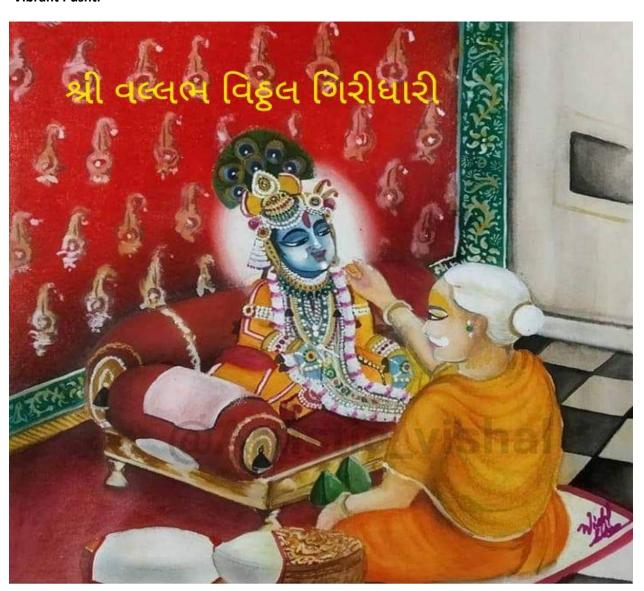
नम: समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।

अनेकरुपरुपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

हम नमन करते है उन्हें जो समस्त भूत के भी आदि भूत या ने संपूर्ण भूत या ने कोई भी काळ के जागृत हो, या पाकृत हो, या बार बार अनेक को अनेक रुप और अनेक प्रकार के रुप उद्भवते हो और वह सर्वे ब्रह्मांड में व्याप्त हो वह केवल और केवल "श्रीप्रभु विष्णु" ही है और वही बार बार "श्रीप्रभु विष्णु" ही होंगे, जिन्हें मैं बार बार प्रणाम करता रहता हूँ।

"Vibrant Pushti"

जल भरन को चलती राधिका के श्याम डगर पर आयो।

मटक मटक चले पायल छनन

दौडे मन की अठखेलियाँ।

बीच डगर श्याम भटकायो

मुख पर मलक भाव जगायो

सर सर उडे चुनरिया

श्याम अगन लपटायो

कैसे छूटे प्रीत डगरीया

अब न कहां न जायो

नैन भी जुडे, अंग भी जुडे

नहीं कुछ छूट पायो

एक हो गये तन मन आत्म

सुधबुध कहीं बिसरायो

ओहह! राधा! ओहह! श्याम!

"Vibrant Pushti"

सृष्टि कब आनंदित होती है?

जब घनघोर घटा छाये

मंद मंद वायु लहराये

पंखीओ की टोली गाये

पत्ते सरर् सरर् फहराये

फूल महक बिखराये

पशु नाच नचाये

मनुष्य उर्मिओ जगाये

श्याम रंग आकाश से बुंद बुंद बरसाये

घनश्याम धरती पर बंसी बजाये

मेरा दिल मंद मंद चुराये

तब सृष्टि आनंदित होती है।

"Vibrant Pushti"

श्रीवैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वश: ।

युधिष्ठिर शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ।।

श्री वैशम्पायनजी कहते है.....

श्री प्रभु की आज्ञा से श्री युधिष्ठिर परम ज्ञानी और परम पूज्य श्री भीष्मपितामह के पास पहुंच कर विनंती से पूछा - हे तात! आप सर्व ज्ञानी और सर्व सामर्थ्यवान हो। आप मुझे अपना शिष्य कर के मुझे सत्यता की शिक्षा प्रदान करो। क्यूँकि मैं अबूध और अज्ञानी यह धर्म और धर्म से अपनाने से जो सत्य प्रकट होता है जिससे हम सर्वत्र से विशुद्ध और पवित्र होगें और सारी सृष्टि को योग्यता प्रदान कर सके।

"Vibrant Pushti"
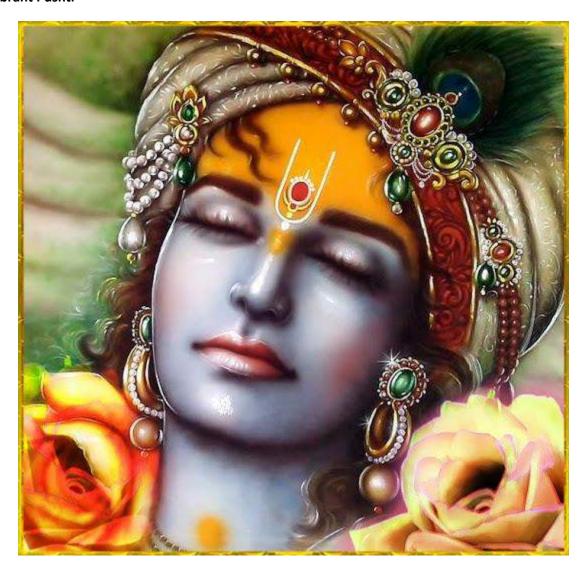
राधाजी अपनी विरह वेदना में श्री कृष्ण को बावरी हो कर ढूँढ रही थी, न मन में चैन था और न पैर में थकान।

बस यूँही चलती चली गहर वन में वनराइ की गहराई में। केवल पत्ते ही पत्ते, पौधे ही पौधे, पैड ही पैड। न श्याम दिखता था और न कोई संकेत, बस सन्नाटा सा था।

इतने में एक मयूर उडते उडते राधाजी की चरणों में गिर गया, राधाजी ने पकड कर अपने हाथों में जैसे उठाया तो वह टहूक उठा। मयूर की टहूक में संकेत था कि श्याम यहीं है, और राधा झूम उठी, और दौडने लगी। आसपास देखते देखते उनकी नजर एक पैड के उपर श्रीकृष्ण के चरण पर पहूँची, और राधा वहां ही बैठ गयी, और नजर श्रीकृष्ण के चरणों पर चिपक गई।

कैसी नजर थी? न पलक का झुकना था या ने अपलक हो गई थी नजर।

नजर से निकलते हर किरण केवल और केवल श्रीकृष्ण को छूती थी। यही किरण कहे रही थी..... कान्हा!

और सारे वन के पत्ते थरथराने लगे, पौधे झुकने लगे, पैड स्थिर होने लगे और धरती सिमटने लगी।

राधा के नयनों के किरण धीरे धीरे तीव्र होने लगे, वह तीव्रता से वायु शुद्ध होने लगा, पत्तों में से रस उद्भव ने लगा और रस कि बूंदे धरती को छूने लगा।

हर स्पर्श से महक खिलने लगी, और ऐसी खिली को वह सीधी श्याम को छू कर उन्हें राधा की आगमन का संकेत कर दिया, और वह उछल कर नीचे धरती पर कुद पडा। नैनो के सामने पाया - राधा!

ओहहह!

मेरे प्रियतम!

"Vibrant Pushti"

जगत के हर जीव तत्व नाशवंत है, भक्षक है।

यही नाशवंत और भक्षण के लिये रक्षण चाहिए, क्या करे?

यही नाशवंत और भक्षण से सलामत रहने क्या करे?

हर शास्त्र कहता है, बार बार कहता है, तो भी हमारा आयुष्य दिन व दिन तुटता जाता है।

क्यूं?

श्री वल्लभाचार्यजी ने कहीं सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान की है, और वह है सेवा। हम सेवा से विलुप्त होते जा रहे है, विखूटे पडते जा रहे है।

सेवा सर्वोत्तम माध्यम है सलामत रहने का, रक्षण करने का।

यह सेवा क्या है?

"Vibrant Pushti"

युधिष्ठिर उवाच

किमकं दैवत लोके किं वाप्येकं परायणम् ।

स्तुवन्त: कं कमर्चन्त: प्राप्नुयुमारनवा: शुभम्:।।

कौन है वह मूळ तत्व यह ब्रह्मांड के सर्व लोक में जो सर्वत्र व्याप्त है और आधार है?

और किसीका स्तवन, पूजन, ज्ञान और भक्ति करके हम खुद अपने कर्म के सिद्धांत से खुद का कल्याण कर सकते है?

"Vibrant Pushti"
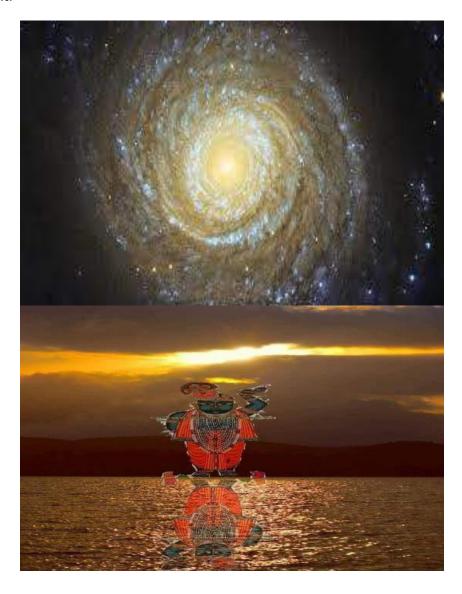
एक बार राधाजी और कृष्ण कन्हाई अपनी गोपीओं के संग आंख मिचौली खेल रहे थे। कृष्ण के आंखों बांधी थी और राधाजी को पकडना था।

सर्वे गोपीओं ने कृष्ण को गोल गोल घुमाकर छोड दिया और कहीं पहूँच गये, छिप गये।

कृष्ण चारों ओर घुमके राधाजी को ढूंढने लगे।

ढूंढते ढूंढते इधर उधर दौडते फिरते वह बहुत घुमे दौडे और एक गोपी के पीछे छिपी राधाजी को पकड लिया, बहुत नाचें और कुदे।

अब बारी आयी राधाजी की, आंखों में बांधे पट्टे से वह भी कृष्ण कन्हाई को ढूंढने लगी।

इधर दौडे उधर दौडे पर हाथ न आये कन्हाई। बहुत श्रम किया पर वह न पकड पाई।

कभी कभी तो इतने पास और कभी कभी तो इतने दूर फिरभी न ढूँढ पाई।

सर्वे गोपीओं संकेत से कहे तो भी कुछ न कर पाई। कन्हैया की नटखट अदायें भी उन्हें समझ न पाई।

कन्हाई सोचने लगे, गोपीओं भी सोचने लगे कि कैसी है राधाजी, क्यूँ न कन्हाई को पकड न पाई?

कहीं समय बीत गया पर कन्हाई और गोपीओं थक गये पर राधाजी न थके।

आखिर खेल खतम किया और सब राधाजी के पास आ गये, राधाजी के आंखों की पट्टी खोली तो ....

सब अचंबित रह गये, अरी! जो आंखों से बंधी पट्टी तो खुली ही रह गई थी और सब कुछ दिखता था।

सर्वे एक साथ बोले - अरी दिखाते हुए भी कृष्ण कन्हाई को क्यूँ न पकड पाई?

तब राधाजी ने बूंदे नयनों से कहा ...

"जित देखु तीत कृष्ण कन्हाई ही नजर आई"

तो कैसे पकडू कृष्ण कन्हाई।

"Vibrant Pushti"

पलकें झुके बार बार मेरी

कौन संकेत सुजाय

नयन से कूछ नजर चुराये

कौनसी रीत जगाय

कौन है ऐसा आत्म चोर

जो प्रीत की ज्योत जगाय

मयूर पंख हुआ सजाय

है यह कृष्ण कन्हैया प्रिय।

"Vibrant Pushti"

कितने मन, कैसे कैसे मन,

क्या क्या करे मन,

न मन धारक जाने,

न मन वाहक जाने,

जाने न कोई गति मन की,

विविध सोच ही जाने,

विविध रीत ही जाने,

मन मंदिर में किसकी मूरत

कोई नहीं पहचाने।

मधुर मधुर मन जो रहता,

वहीं श्याम सुंदर को जाने,

उन्हें भी श्याम सुंदर ही जाने,

कैसे है यह जगत के मनवे,

जो न किसीको जतावे,

खुद रोये, खुद तुटे,

सबको खेल खेलावे।

"Vibrant Pushti"

एक बार "श्री चैतन्य महाप्रभु" चलते चलते एक ऐसे वन में जा पहुँचे जहां लता और पत्ते से भरे हुए गाढ थे, रंग बिरंगे फूलों, पत्ते, वनस्पति थी।

जैसे जैसे उनकी नजर जहां जहां पहूँचती थी वहां वहां से कोई आवाज निकल रही थी।

यह आवाज से उनमें तीव्रता जागती थी।

इतने में कोई ऐसी आवाज उन्हें सुनाई दी और वह रुक गये, और वह आवाज की ओर जाने लगे, जैसे पहूँचते ही उन्होंने देखा तो फूलों और पत्तों खील उठे हंस उठे।

ऐसा देख कर वह भी हंस उठे।

ओहहह! उनकी यह हंसी से सारा वन खील उठा और सर्वे हंस ने लगे। सारा वन आनंद में झूम उठा, और सबके ह्रदय से एक पुकार जागी -

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण हरे कृष्ण

हरे राम हरे राम हरे राम हरे राम"

ऐसे नाचते कूदते "श्री चैतन्य महाप्रभु" अपने आप में खो गये और सर्व से एक हो गये।

"Vibrant Pushti"

नहीं छूते मुझे वो विचार धारा

नहीं छूते मुझे वो रीत

जो कान्हा को नहीं भाती

होना है मुझे केवल पल पल

जो विचार कान्हा के जागे

जो रीत कान्हा के लिये दौडे

चाहे मुसाफिर हो बार बार जगत का

पर हर बार वही ही राह पर चले

जो राह पर कान्हा गौचारण लीला चले।
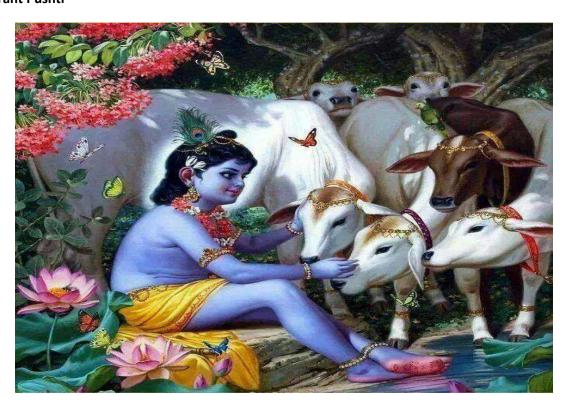
"Vibrant Pushti"

कभी भीगे नयन देखे

देखे भीगे दिल

कभी भीगे होंठ देखे

देखे भीगे गाल

कभी भीगी सांस देखी

देखे भीगे चरण

न भीगी कभी मेरी आत्मा

जो भीगोने खुद प्रिय पधारे

कैसा हूँ मैं बावरां कनैया

तुझको भी न पहचाने

कैसी है यह रीत संसार की

जो कोई किसीको न पहचाने

बार बार नयनों से दर्शन करे

बार बार होठों से स्मरण पुकारे

तो भी न तुम्हें पहचाने

खुद आजा मुखडा दिखाने

खुद आजा खेल रचाने।

आजा कन्हैया! आजा कन्हैया!

मुझसे रहा नहीं जाय।

"Vibrant Pushti"

हम बार बार श्रीराधा! राधे! राधा पुकारे तो क्यूँ श्रीकृष्ण कन्हैया दौडा चला आये ...

श्रीराधा! राधे! राधा क्यूँ नहीं?

"Vibrant Pushti"

करार्विंदेन पदारविंदम मुखार्विंदे विनिवेशशयंतम ।

वटस्य पत्रस्य पुटे शयानम बालं मुकुंदम मनसा स्मरामी ॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण की प्रीत रीत निराली, अनोखी और अलौकिक क्यूँ थी?

क्यूँकि श्रीराधा और श्रीकृष्ण की प्रीत आत्मीय सभर विशुद्ध और निर्लेप थी। दोनों ने खुद को ऐसा संवारा था कि दो तन और दो आत्मा होने से भी ऐक थे। ये असामान्यता है। यह ऐक ऐसी पराकाष्ठा है जिसमें वो दो नहीं पर ऐक हो जाते है।

पर श्रीकृष्ण ही क्यूँ दौडे?

क्यूँकि श्रीराधाजी की सर्वथा शक्ति श्रीकृष्ण में निरुपित हो जाती है, इसलिए जब भी कोई पुकार पहूँचती है श्रीकृष्ण जागृत हो जाते है, यह पराकाष्ठा में ऐसा भी होता है की अगर किसी ऐक को जो भी कुछ होता है उसकी असर दूसरे को होती है, जैसे श्रीराधाजी को गरम दूध पीना और श्रीकृष्ण में बल बूले उठना। ऐसी असर, ऐसा ऐहसास रहता है।

यह रीत प्रीत साधारण नहीं है, यह रीत ही खुद को परमात्मा कर देती है। यह रीत में न काळ कुछ कर सकता है, केवल सत्य ही सत्य होता है। कोई क्षण का जूठ, कोई रमत इन्हें साधारण कर देती है।

सर्वोच्चता और सर्वोत्तमता आत्मा हो जाती है, जिसे संसार से नहीं कोई नाता और न कोई असर स्पर्श करती है।

"Vibrant Pushti"

को धर्म सर्वधर्माणां भवत परमो मत: ।

किं जपन्मुच्यते जन्तुजरन्मसंसारबन्धनात्।।

हे तात! कौनसा धर्म सर्व धर्मों में परमोत्तम है? जो धर्म आपने अपनाया है?

कौनसा जप और सेवा से संसार के जीव जन्म के बंधन से मुक्त हो?

क्यूँकि असंख्य प्रमाणित धर्म यह जगत में संशोधित है और उदभवते है।

हम बार बार विचलित हो कर कुछ योग्य समझ नहीं पाते है और न कोई योग्य पहचान कराते है, जहां देखे, जहां कहे योग्यता से हमें संस्कृत नहीं करते है।

बस केवल ऐक व्यापार करते है और हम भटक जाते है। पता नहीं कैसी यह रीत है, और मार्ग दर्शन है?

"Vibrant Pushti"
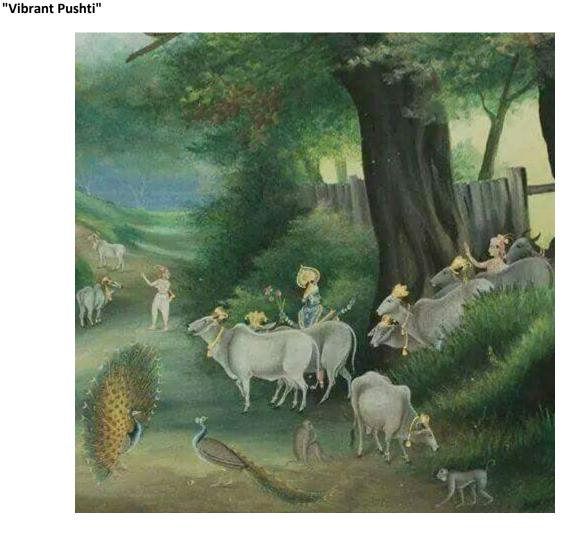
व्रज रज की धूली उडाये

गौ पैरों से ताल सजाये

कान्हा मेरे घर आये

हाथ में लकूटी कांधे पर कामली

थडक थडक डग भर आये

कान्हा मेरे घर आये

मुख पर मयूर पंख गले वन माला

बंसी धून लहराये दौडे आये

कान्हा मेरे घर आये

बीच डगर पर आरती सजाये

विरह वेदना के फूल बरसाने

कान्हा मेरे घर पधारे

शृंगार पहनके मुस्कान लिये

नाच नचाते गीत गाते बुलाये

कान्हा मेरे साथ बिराजे

ओ कान्हा!

"Vibrant Pushti"

"वासुदेव परं ज्ञानं वासुदेव परं तप: ।

वासुदेव परो धर्मो वासुदेव परा गति ।।

हिन्दू संस्कृति और धर्म में यह अजोड और अलौकिक सूत्र हमें पल पल याद कराता है।

सत्य को पाना है तो यही सूत्र समझना है।

जीवन की हर पल धन्य और संस्कृत होती है।

हम निवेदन करते है

यह सूत्र का अर्थ चोक्कस समझे ।

"Vibrant Pushti"
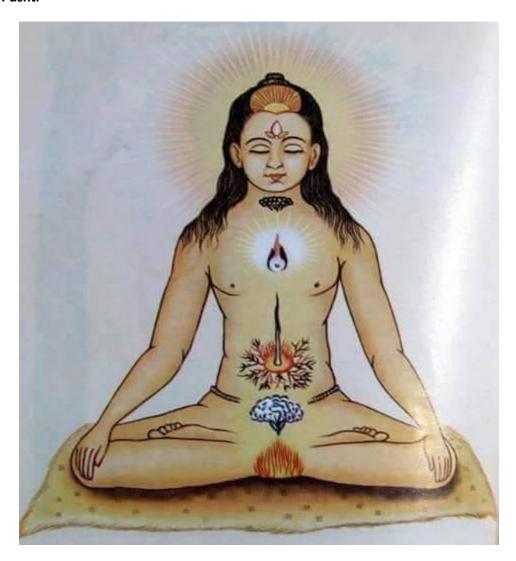
"प्रीत करते है" कहने से हममें शुद्धता जागृत होती है, पवित्रता प्रकट होती है, निर्मलता निर्माण होती है।

क्यूँकी यही ऐक अनोखी रीत है जिससे आत्म विश्वास को सिंचन करते है, निष्ठा में द्रूढता बढाते है और निडरता से संसार की दुष्टता को नष्ट करते है। आनंद का प्राकट्य होता है।

"प्रीत" का अर्थ है

समर्पण

शरणागत

भक्ति

पुष्टि

निस्वार्थ

निर्गुण

स्थिर

निसंदेह

ऐकात्म

सत्य

विरह

अनंत

अमृत

सलामत

"Vibrant Pushti"

"आध्यात्मिकता" का सिंचन संस्कृत पढने से नहीं संस्कृत होने से जागृत होता है। यही संस्कृत से संस्कार जागते है और यही संस्कार से संस्कृति।

यही संस्कृति को सदा बहती रखने के लिये शिष्ट और निखालषता अति आवश्यक है। सच कहे तो आज के भारत भूमि जो जगत की आध्यात्मिक भूमि कहलाती थी वह आज नष्ट हो चुकी है, क्यूँकी न हममें शिष्टाचार है और नहीं निखालषता है केवल आडंबर है जो हमें स्वार्थी और निर्लज्ज बनाते है।

यही स्वार्थता और निर्लज्जता तोडऩे हमें शिष्ट और संस्कृत होना चाहिए।

आजकल हर व्यक्ति बार बार तंग आ जाता है, थक जाता है, वह आनंद प्रकट नहीं कर पाता, क्यूँ? उनके विचार और क्रिया अशिष्ट है।

हम ही केवल है जो यह समझना है और वही मनुष्य है।

"Vibrant Pushti"
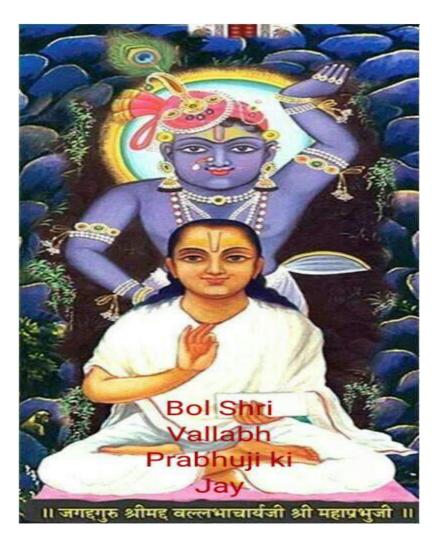
लीला प्यारी है, मेरे श्रीनाथजी!

कैसे खेले है आंख मिचौली, मेरे श्रीनाथजी!

कंदब पर चड जाये

यमुना में छूप जाये

कहाँ ढूँढे कैसे ढूँढे नयनों से, मेरे श्रीनाथजी!

बंसी की तान छेडे

रंगो की बौछार उडाये

कहाँ पकडे कैसे पकडे पुकार से, मेरे श्रीनाथजी!

लीला प्यारी है, मेरे श्रीनाथजी!

कैसे खेले है आंख मिचौली, मेरे श्रीनाथजी!

"Vibrant Pushti"

हमारी जीवन रचना

हमारे शरीर रचना

हमारे मन रचना

हमारे दिल रचना

और

हमारे काल रचना

कितनी अदभुत है,

जो समझ गये तो अलौकिक

जो समझ गये तो आनंद

जो समझ गये तो श्रीप्रभु में परिवर्तन।

कितना उच्च अनुग्रह परमात्मा का जो सदा याद ही रखा जाय।

"Vibrant Pushti"

सांस की गहराई तक पहुँच कर जो स्पर्श करते है तो एक ज्योत हमें छुती है,

यह ज्योति से सारा आत्म प्रकाशमय होता है,

यही प्रकाश से एक पुकार उठती है, यही पुकार से एक स्वर प्रकट होता है,

यही स्वर से जो गुंजन होती है,

यह गुंजन परमात्मा से जुडती है,

यह जुडी रीत प्रीत में परिवर्तन हो कर परमात्मा को हमारी तरफ खींचती है,

यही खींची रीत भक्ति हो जाती है,

यही भक्ति से हम श्रीप्रभु के प्रियतम हो जाते है और हम और श्रीप्रभु एक हो जाते है।

"Vibrant Pushti"
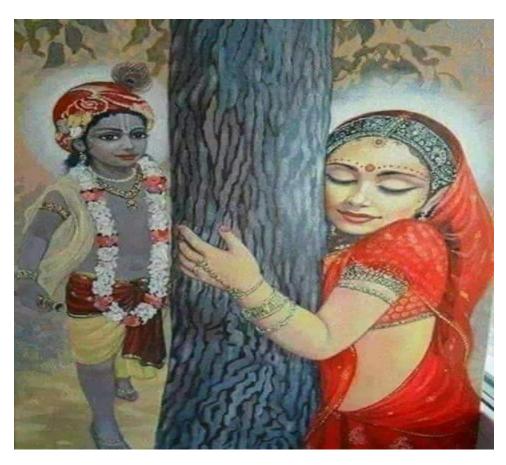
प्रीत स्पंदन

सत्य से न छुपा जाये कोई सत्य से न छुटा जाय ।

जूठसे सत्य कितना बनाये, वह सत्य न कहा जाय ।

अविश्वास से विश्वास कितना रचा जाये, वह विश्वास कहा न जाय ।

चोरी से धन कितना चुराये, वह धन कहा न जाय (धन - बुद्धि) ।

प्रीत से न छुपा जाये न छुटा जाये, रीत ही आग है, जिसमें जूठ, अविश्वास और चोरी छुपा न जाय ।।

"Vibrant Pushti"
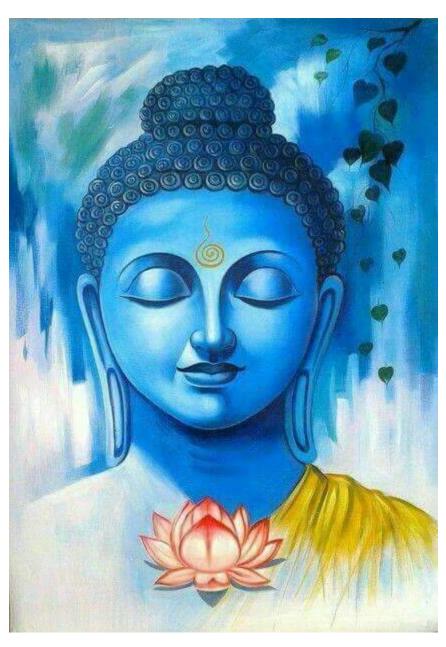
श्यामा को ढूँढे कृष्ण कन्हैया

बन बन भटकत जाये

कभी नयनों की दृष्टि से पुकारा

कभी होठों की स्वर से पुकारा

पर न कहीं सोहाय प्रियतम

बंसी की धून से कण कण पूछा

पैरों की गति से रज रज पूछा

पर न कहीं दिशाय प्रियतम

धडकन की तडपन से पुकारा

मन की मनन धारा से पुकारा

पर न कहीं महकाय प्रियतम

श्यामा को ढूँढे कृष्ण कन्हैया

बन बन भटकत जाये

"Vibrant Pushti"

जीवन में कहीं रिश्ते ऐसे जुड जाते है जो रिश्ते हमें जीना शिखा देती है, यही रिश्ते का नाम है "मित्र"।

न मान, न सन्मान, न सुख न स्वार्थ, केवल देना ही देना - क्या देना - खुद का जीवन! हाँ! यही तो स्वाभिमान है, यही तो बलिदान है, यही तो समर्थन है, यही तो स्वागतम् है "मित्रता" का।

जिसका हर स्वर और अक्षर शिक्षा,

जिसकी हर नजर और कार्य पवित्र,

जिसका हर विचार और रीत संयम,

यह रस पीने के लिये हमें कैसा होना चाहिए?

ऐसा हाथ थामने के लिये हमें कैसा होना चाहिए?

मित्रता में मित्र मित्र से सवाया होता है।

पति पत्नी से भी यह रिश्ता होता है।

जगत में यह रिश्ता केवल एक ही आत्मीय व्यक्ति ने निभाया है और वह है "कर्ण"।

वंदन करते है यह रिश्ते को और शायद हम सर्वे मिल के कुछ ऐसा करते जाये की "कर्ण" जैसा कोई आत्मीय व्यक्ति को घडते जाये, संस्कृत करते जाये यही जागृतता हो हमारी।

"Vibrant Pushti"

"भजन" हम बार बार सुनते है, कहते है - भजन में जाना है - भजन करना है।

रह भजन क्या है?

भजन क्यूँ करना है?

भजन कैसे करना है?

भज + अन = भजन

भज = भजना। भज = जो विचार या क्रिया हम बार बार करते रहते है या दोहराते है उसे भज कहते है।

अन = केवल एक = अनन्य।

केवल एक ही विचार या क्रिया बार बार करते है या दोहराते है उसे भजन कहते है।

पर कौनसा विचार या क्रिया? जो विचार या क्रिया केवल पवित्र स्मरण में करे या दोहराये उसे भजन कहते है।

भजन से संयमता जागृत होती है।

जिसमें खुद को स्थिर करने का प्रयोग करते है। भजन पुकार है, संकेत है, संदेश है।

भजन उत्तम शिक्षा प्रदान करता है।

"Vibrant Pushti"

हर हवा की लहर में महक है

हर सूरज की किरण में जागृति है

हर धरती की रज में शक्ति है

हर आकाश की अवकाश में विशालता है

हर सागर की बुंद में सिंचन है

हर वनस्पति की पत्ती पर औषधि है

"Vibrant Pushti"

राधा ने राधा को पूछा राधा क्यूँ रोये?

राधा ने राधा को कहा हा! राधा क्यूँ रोये?

तब राधा का दिल पुकारा

"जो रीत में आत्म का सहारा है!

"जो रीत मे एक ही मन का सहारा है!

"जो रीत में धडकन का सहारा है!

वो रीत में न कोई सहारा चाहिए, वह रीत में मेरा एक ही सहारा है वह है "मेरा साँवरिया!"

जो हर पल मेरा है और मेरे साथ है। तो मैं क्यूँ रोऊँ?

"Vibrant Pushti"

आप सर्वे को विनंती करके कहता हूँ

"यह शरीर या ने ये मनुष्य जन्म यूँही नहीं मिला है, यह कहीं जन्मों की सार्थकता है और यह सार्थकता हमने खुद ने शुद्ध और पवित्र कर्म से ही प्राप्त किया है, यही ही एक साधन है जिससे अलौकिकता से खुद को सिद्ध करके श्रीप्रभुत्व पायेंगे, यही ही हमारा अमृत है। शरीर का सिंचन करके भव सागर की नैया रच कर जीवन कृतार्थ करे। यही प्रार्थना है।

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

जीवन जीने के लिये हम शिक्षा नहीं पा सकते है, ज्ञान नहीं सिंचन कर सकते है ऐसा तो नहीं है, हम कैसे भी पा कर हम खुद को योग्य करते है और जीवन जीते ही है।

यह ज्ञान और शिक्षा हम हमारे आसपास रहते व्यक्तियों से शिख लेते है चाहे कितना भी हम पढे हो।

सच में तो पढाई से जीवन रीत योग्य और उत्कृष्ट रहती है पर हम एक प्रवाह में ही जीते है।

हम बहुत कुछ कर सकते है और करना है।

कहीं घरेड तोडनी है, कहीं पद्धति रचानी है।

उच नीच का भेद ही हमें उत्तम जीने नहीं देता है।

यह जो उच नीच की बात कही है .....

समझना अति आवश्यक है।

जबसे हम जीवन और हम समझ ने की कक्षा पर पहुंचते है और खुद की निर्णय शक्ति से जीवन की शुरुआत करते है तबसे यह वृत्ति का सिंचन हमारे कुटुंब, समाज, रीतिरिवाज और धर्म से शुरू होता है।

यही से हमें उच नीच की मात्रा का ज्ञान होता है, हम यही घरेड में खुद को बैठाने की कोशिश करते है।

यह तोडना है।

साथ साथ जीने की सही समझ हममें जागृत हो और हम हर एक को सही रीत और जवाबदारी की समझ जगाये तो यह भेद तुट जायेगा।

यही समझना है।

हम हर एक के साथ रहते है, हर एक क्रिया साथ साथ करते है तो हर विचार और क्रिया को सही ढंग से ही समझना है।

हमारे हर विचार में भिन्नता है पर लक्ष्य एक ही है, सुंदर जीना।

"Vibrant Pushti"

जगत की जितनी भी संस्कृति है सब संस्कृति में उच निच का माध्यम ही नहीं है। जो मनुष्य अपने विचारों से यह उच निच की भाषा और अर्थ करता है वह मनुष्य को खुद को पहले समझना है कि यह अलगता वादी क्यूँ?

हर मनुष्य का जगत है, हर मनुष्य को अपनी खुद की समझ है, बस यही समझ से वह कौन है? क्या है? यही उसकी पहचान है।

अब यही समझ में परिस्थिति अंतर्गत जो पद्धति रचाती है वह निभानी होती है। पर यह समझ बार बार परिवर्तन होने से असंख्य तकलीफें उठती है और बार बार ना समझी उद्भवती है, और हम परेशान होते है।

श्री ऋषिओं ने यही समझ का गहरा अभ्यास करके ही चार वर्ण की व्यवस्था की है, पर यह चार वर्ण व्यवस्था हम समझ नहीं पाते है।

मनुष्य स्वतंत्र है अपना सर्वत्र के लिये पर यह स्वतंत्रता तब पाता है जब वह यह वर्ण व्यवस्था समझे। आज इतनी तकलीफें क्यूँ है?

हम खुद और हमारी साथ काम करे वह उनकी समझ से ही खुल के कार्य शैली समझे, खुद की महत्वता समझे।

आज एक दूसरे की जवाबदारी समझते नहीं है और जीवन जीते है। यह जवाबदारी या ने जो पढा वह काम के बदले दूसरा काम ही करते है।

तो यह उच निच की पद्धति उजागर होगी। यही हमें तोडना है, विचार और कार्य पद्धति से सबको महत्वता से देखेंगे तो सब खुद को भी समझेंगे और दूसरो को भी समझेंगे और एक सुंदर रीत रचायेगी जिससे न कोई अलगता वाद, ना समझी जागेगी, सब समांतरता से जियेंगे और सुंदर जीवन होगा।
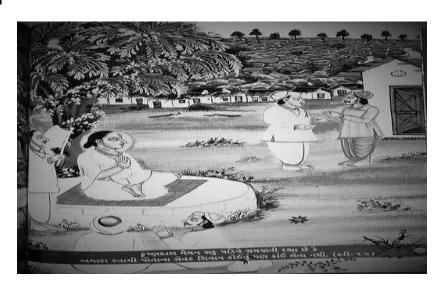
"Vibrant Pushti"

कितने नाम से तुम्हें पुकारे

तेरी अदा से तु है निराले

कान्हा कहे या नटखट कान्हा

यमुना के तट का बंसी बजैया

गौचारण का कृष्ण कन्हैया

गोपीजन रक्षक गिरिधारी

कुंज गलियों का कुंज बिहारी

ऐसी लीला कितनी रचाई

मै हो गई तेरी कृष्ण मुरारी

सुनते है हर घडी

पुकारते है हर घडी

छूते है पल पल

देखते है पल पल

पर वह नहीं पाया

ढूँढते ढूँढते दूर ही जाया

कैसे रहते है तुम बिन कनैया?

एक पल सूंघ ले लो साँवरिया।

"Vibrant Pushti"
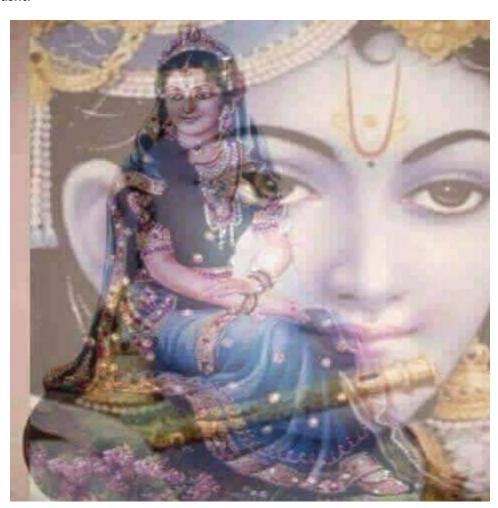
पलकें झुकें तो प्रकाश छाये

पलकें खुले तो अंधेरा

कैसी रीत है यह जगत की

जो रोम रोम बुझाय

तो

धडकन से अग्नि जलाना

प्रीत से दिपक जगाना

तन से कर्म निष्ठा धरना

आनंद जीवन जीया जाय

"Vibrant Pushti"

हे गिरधर !

हर मंदिर से आवाज उठे

हर मस्जिद से आवाज उठे

हर मंदिर की मूरत से आवाज उठे

हर मस्जिद की कब्र से आवाज उठे

जाग है मनुष्य! जाग

जाग है इन्सान! जाग

तुझे अब हम पुकारे

तुझसे यह दुनिया उजडे

उजडे सारे लोक

अब तो चैन से सांस ले

अब न खुद को खोद

तुहीं है एक जगत का प्राणी

जो प्रीत की रीत जगोई

करले प्रीत अब सर्व जगत से

यही अमृत अब बोई

एक मेक से जुड जा ऐसा

कभी न दुख किसीको होई।

"Vibrant Pushti"

हर मंदिर तरफ भाग रहे है

हर आरती पर रो रहे है

हर घर में भजन कर रहे है

हर यात्रा धामों में दौड रहे है

क्या भगवान को जगा रहे है

या खुद जाग रहे है?

"Vibrant Pushti"
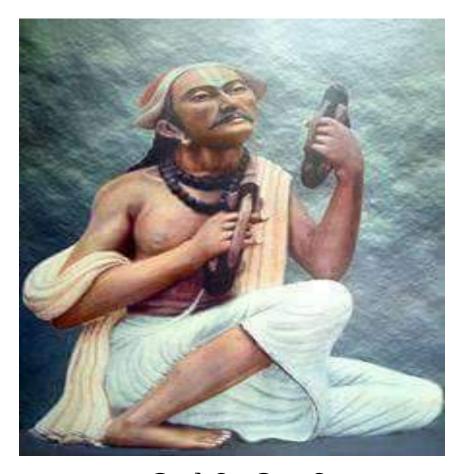
भक्ति है रीत निराली

परब्रह्म आँसू रोय भक्त ब्रह्म धोय

कभी कोरा कागज को पढा है?

कभी आयना में छिपे हो?

कभी आकाश में लिखा है?

"Vibrant Pushti"
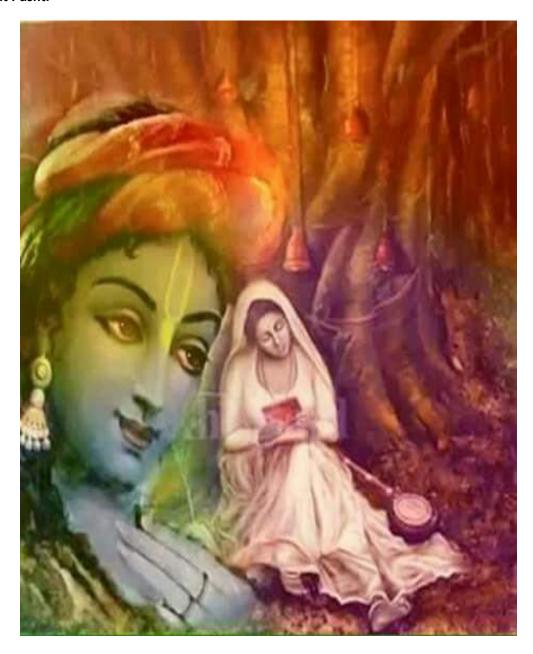
हम बार बार सोचते है की यह दुनिया में क्या जीना, कैसे जीना?

तो भी हम जी रहे है। क्यूँ?

क्यूँ की यही जगत में आज भी सूरज उगता है, और कहता है "हम है ने!"

क्यूँ की यही जगत में आज भी धरती लहराती है, और कहती है "हम है ने!"

क्यूँ की यही जगत में आज भी पंखी गाते है, और कहते है "हम है ने!"

क्यूँ की यही जगत में आज भी सागर दौडता है, और कहता है "हम है ने!"

क्यूँ की यही जगत में आज भी झरना कुदता है, और कहता है "हम है ने!"

ओहहह! तो तो हम भी सर्वे को कहते है, "हम है ने!" "पुष्टि जीव"

"Vibrant Pushti"
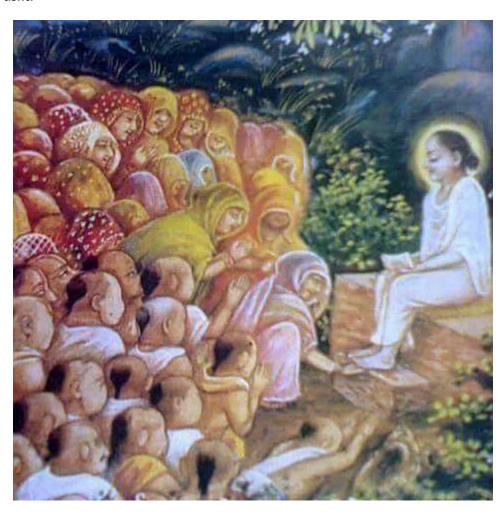
है मानव!

तु ऐसा न समझ की तुम हमें दाना दे तो ही हम जी सकते है।

तु ऐसा न समझ की तुम गौचारण करने से ही हम जी सकते है।

तु ऐसा न समझ की तुम हमें पानी पिलाने से

ही हम जी सकते है।

तु ऐसा न समझ की तुम हमें अपने साथ रखने से ही हम जी सकते है।

तुम्हें पता है

हर दाना कैसे उगता है?

हर घास चारा कैसे उगता है?

हर बुंद कैसे बौछार कैसे होती है?

हर साथ कैसे रचाता है?

"Vibrant Pushti"
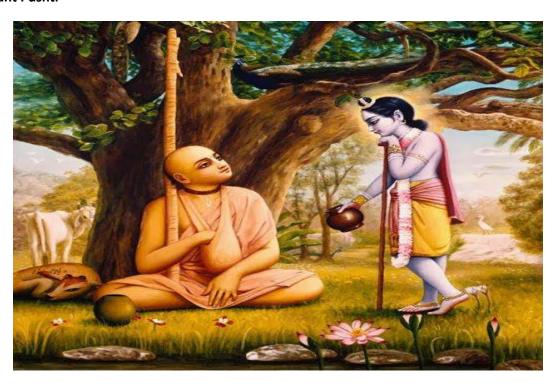
राम के चरण से आचरण करलें मनवा

श्याम के शरण से भक्ति शिखलें तनवा

राम से नाता जोडलें नयनवा

श्याम से आत्मा जोडलें दिलवा

एक से संस्कार सिंचले जनमवा

एक से प्रीति जगाले अजन्मा

"Vibrant Pushti"

राधा को देखते देखते मैं श्याम भयी

श्याम को देखते देखते मैं राधा भयी

हम खुद हमको भूल गये

कि मैं राधा भयी या श्याम?

कैसे रहे हम कैसे जीये हम

कैसी है ये रीत प्रीत की

कौन पीया कौन प्रियतम होइ?

"Vibrant Pushti"

जीवन की रीत में कौन कौन जीये जाय

दुखडा गाये रोना आये जनम जनम पछताय

कैसी है यह जाल मनुष्य की पल पल भरमाय

इसको पकडे यह यह तुटे समय छूटा जाय

कौन कौन विश्वास धरे किसको क्या सुनाय

आये अकेला जाये अकेला क्यूँ करे यूं हाय

जगाजा तन मन जोडजा सांसें प्रभु मिलन जो होय

"Vibrant Pushti"

"श्री यमुनाष्टकम्" में "श्री वल्लभाचार्यजी" ने जो अलौकिकता दर्शायी है और हम सर्वे को स्पर्श करने की आज्ञा प्रदान की है, यह रचना से जीवन जीने में क्या क्या पुरुषार्थ करना है वह जताया है।

अष्टक में

"नमामि यमुना महं"

"मुकुंद रति वर्धिनी"

"नमत कृष्ण तुर्य प्रियाम्"

"सकल गोप गोपी वृते"

"समागमनतोऽभवत्"

"मनसि मे सदा स्थियताम्"

"तव हरेर्यथा गोपीका:"

"तनुनवत्वमेतावता"

"पुष्टिस्थितै"

"सौख्यमामोक्षत:"

"समस्तदुरितक्षयो"

"स्वभावविजयो"

यही सर्वोत्तमता प्रदान की है। जिससे जीवन मधुर होता है और हम मधुरापति के हो जाते है।

"Vibrant Pushti"

जगत में घुमते जगत के हम हो गये

खुद को जगत से दूर कर रहे है तो

जगत हंस रहा है हम तडप रहे है

खुद आया जगत में खुद को ढूंढने

खुद न समझ सका खुद जगत हो गया

"Vibrant Pushti"

जन्म जीवन जगत

"पुष्टि मार्ग" की हर रचना को पाठ न समझो,

हम कितने वर्षों से पाठ करते आ रहे है। सत्य तो यह है कि एक भी रचना पाठ नहीं है।

यह तो शिक्षा है, समझ है और हर सूत्र से ज्ञान और भक्ति का सिंचन होता है।

यही ज्ञान और भक्ति जगत जीवन में योग्यता पूर्वक जगाने से हम हमारे विचार और क्रिया में विश्वास निरूपण करेंगे जो हमें जीवन जीने की पद्धति दर्शायेंगे, हमारा जन्म सार्थक होगा, हम खुद को पहचानने लगेंगे।

"Vibrant Pushti"
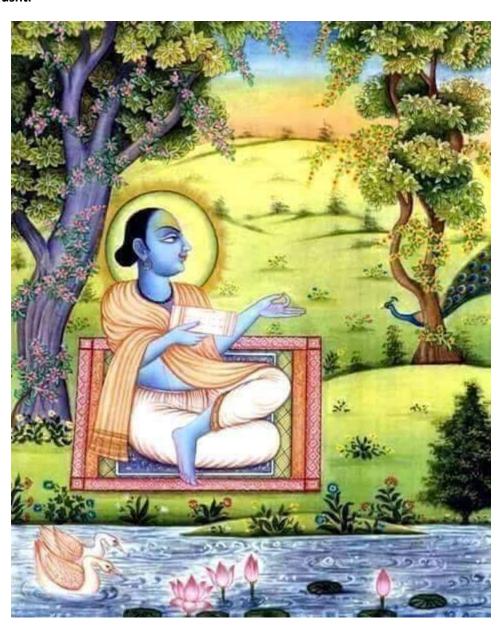
"पाठ" का सही अर्थ है पठन करना। पठन क्या करना, कैसे करना, क्यूँ करना?

यह समझना अति आवश्यक है।

जो रचना रच गयी है - कौन कौन से आधार पर वही उनकी महत्वता है।

"श्री वल्लभ" हर रचना एक असाधारणता दर्शाती है। यही रचना को पहले समझले, उनका मूल हेतु क्या है? और यही रचना को समझ कर उन्हें अपने जीवन से जोडेंगे तब ही हमें यह रचनाओं की सामर्थ्यता प्रदान करेंगे।

ऐसे ऐसे गाने से या मनमें बोलने से पाठ नहीं होता है।

हम कितनी बार पढते है, गाते है, मनन चिंतन करते है पर उनका अर्थ नहीं समझते है।

तो क्या?

कूछ नहीं।

केवल समय का दुरुपयोग, खुद को अंधश्रद्धा में बहाना।

"Vibrant Pushti"

"कृष्ण"

कृ अक्षर से पढने से मन स्थिर होता है।

ष् अक्षर पढने से मन का आकर्षण होता है।

ण अक्षर पढने मन की सांसारिक वृत्ति का नाश होता है।

"ओह कृष्ण!"

"कृष्ण"

कृ अक्षर लिखने से तन में रोमांच जागता है।

ष् अक्षर लिखने से तन की इन्द्रियां का आकर्षण होता है।

ण अक्षर लिखने से तन की शुद्धि होती है।

"वाह कृष्ण"

"कृष्ण"

कृ अक्षर सुनते ही भक्ति का सिंचन होता है।

ष् अक्षर सुनते ही ज्ञान प्रकाश का किरण उगता है।

ण अक्षर सुनते ही आत्म ज्योति तेजोमय होती है।

"प्रणाम कृष्ण"

ओह कृष्ण तन मन धन से हम तेरे

सदा रहना जीवन के घट घट में

तुहीं है हमारा ऐक सहारा

तुजसे है यह जीवन उजियारा।

"जय श्री वल्लभ"

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

" ओहह कृष्ण - वाह कृष्ण - प्रणाम कृष्ण "

"व्रज" यह शब्द कान्हा का नहीं है, यह तो केवल "राधा" से है। राधा है तो ही कान्हा है।

कान्हा के हर अर्थ में केवल राधा है। कान्हा अकेला नंदगांव रहता या गोकुल रहता तो व्रज नहीं होता। व्रज की रचना राधा और कान्हा से है। बरसाना, वृंदावन से जो सिंचन हुआ जिससे पुरा व्रज अलौकिक रच गया।

हर रज में, हर लहर में, हर बूँद में, हर श्वास में, हर स्वर में, हर अक्षर में, हर संगीत में, हर याद में, हर अदा में - राधा कान्हा!

आज भी व्रज की हर रज में हर गली में एक ही गुंज उठती है राधा! क्यूँ?

क्यूँ की आज भी राधा "कृष्ण" की पुकार कर रही है और यह सत्य है।

और आज भी कृष्ण जो व्रज छोड के भाग गया है वह "राधा" को पुकार रहा है।

यह सत्य है।

क्या हम सोच सकते है की

"राधा" कान्हा के बिना रही हो?

और

"कान्हा" राधा के बिना रहे हो?

क्या है यह सत्य?

यह समझना ही सत्य कहे तो भक्ति है, ज्ञान है, पुरुषार्थ है, जीवन की सत्यता है।

एक दिशा दर्शाता हूँ।

श्री परम भगवदिय और आत्मीय तत्व श्री राधा स्पर्शीय श्री हरिवंशजी के हर श्वास, हर अक्षर, हर धडकन, हर नजर, और हर स्पर्श में केवल और केवल "श्रीराधा" है।

उनके रचीत हर पद में "श्रीराधाजी" का सत्कार, सम्मान और आत्म समर्पण है।

"Vibrant Pushti"

" राधा - कान्हा - बांके - वृंदावन - हरिवंश - राधे

वृंदावन का एक श्रीयमुनाजी का घाट है, आज भी यह घाट पर स्वर सुनाई देता है। कैसा और क्यूँ?

यहाँ की लीला परमात्मा की प्रीत का रहस्य समझना उच्चता होगी।

श्रीकृष्ण जब गोकुल से मथुरा जा रहे थे तब की यह बात है। राधाजी समझ गये कि अब कान्हा जायेगा ही, तब .....

राधाजी ने कान्हा से कहा:

कान्हा ये रीत कैसी है?

हम एक दूसरे से बिछड रहे है। क्या ऐसा होता है?

कान्हा ने कहा:

हम भी यही सोचते है कि क्या ऐसा होता है?

दोनों गहरी सोच में पड गये।

धीरे धीरे व्रज रज ने हलकी सी लहर फैला कर दोनों को रज से छू लिया और दोनों मुस्कुराये....

राधे! यह कैसी रीत है? हम तुमसे दूर कैसे जा सकते है?

हाँ! कान्हा! पर कुछ तो है, जो ऐसे संजोग उद्भवते है। सोचते सोचते वह इतनी गहराई में पहूँच गये

ये मन क्या है?

ये तन क्या है?

ये जीवन क्या है?

ये जगत क्या है?

ये प्रीत क्या है?

ये हम और तुमहीं क्यूँ जुडे?

ये कौनसी रीत है?

ये कौनसा सिद्धांत है?

ये परमब्रह्म कि यह क्या लीला है?

ये जगत को क्या पहचान करवाते है?

ये ज्ञान और भक्ति की कैसी परिभाषा है?
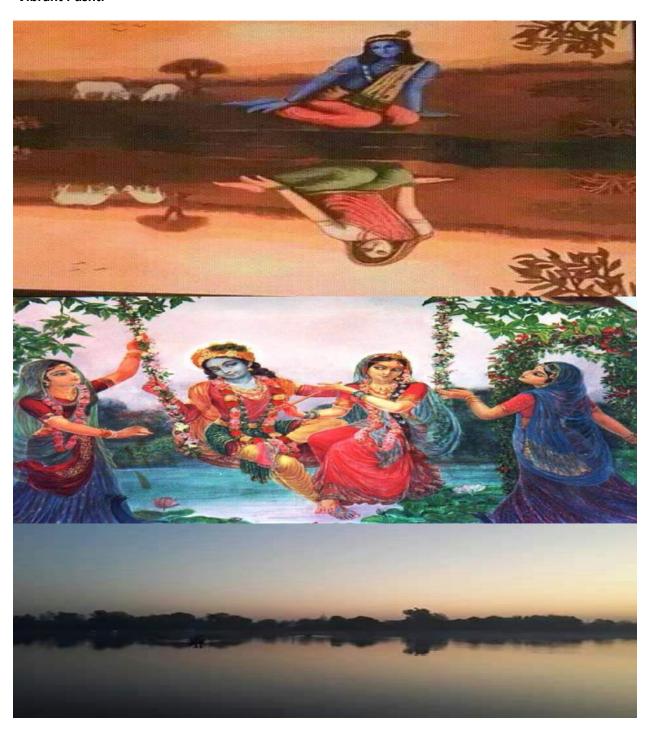
"Vibrant Pushti"

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि राधा कृष्ण अंक - द्वितीय

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "